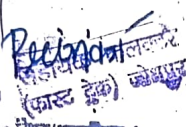
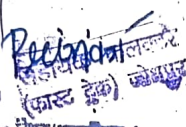
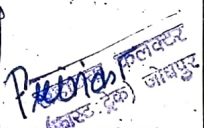
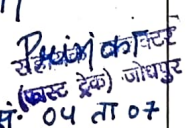


Order Sheet (Subsequent)

CNR NUMBER

Number of Case Year

Versus

Date	Order with initials of Presiding Officer	Brief no
05/3/24	<p>पत्रावली पेशा अग्रार्थी सं. 04 सं 06 उपस्थिति बजावत हेतु समय पाहा नी - शाखादिन में अंतिम अवसर दिना जाकर पत्रावली दिनांक 05/4/2024 की पेशा हो</p> <div style="text-align: center;">  <p>पत्रावली पेशा अग्रार्थी सं. 04 सं 06 उपस्थिति बजावत हेतु समय पाहा नी - शाखादिन में अंतिम अवसर दिना जाकर पत्रावली दिनांक 05/4/2024 की पेशा हो</p> </div>	
05/4/24	<div style="text-align: center;">  <p>पत्रावली पेशा अग्रार्थी सं. 04 सं 06 उपस्थिति बजावत हेतु समय पाहा नी - शाखादिन में अंतिम अवसर दिना जाकर पत्रावली दिनांक 05/4/2024 की पेशा हो</p> </div>	
08/05/24	<p>पत्रावली पेशा अग्रार्थी सं. 04 व 06 उपस्थिति हेतु अंतिम अवसर दिना जाकर पत्रावली दिनांक 13/05/2024 की पेशा हो</p> <div style="text-align: center;">  </div>	
13/05/24	<p>पत्रावली पेशा वकुलाय उफा उन्नयपस बहस सुनी गई। वास्ते आदेश पत्रावली दिनांक 15/05/24 को पेशा हो</p> <div style="text-align: center;">  </div>	
15/05/24	<p>पत्रावली पेशा पूर्व में अग्रार्थी सं. 04 ता 07 को उपस्थिति एवं अवाज हेतु अनेक अवसर दिये जा चुके हैं, किंतु पालना नहीं की गई। अग्रार्थी सं. 04 ता 07 के विरुद्ध एकपक्षीय कार्यवाही की जाती है। अग्रार्थी एवं अग्रार्थी सं. 01 ता 03 की पुनः बहस सुनी गई। मुताबिक बहस अग्रार्थी - " प्रार्थीगण के दादा के 02 पुत्र दुर्गा व जीरा थे, जिन्हें</p>	

Order Sheet

CNR NUMBER

Date of copy of
of the Order

at

Kind of the Case

Number of Case

Year

Versus

Order with initials of Presiding Officer

Brief note of compliance
of the Order

हिस्से में $Y_2 - Y_2$ जमीन प्राप्त हुई
 विवादित भूमि का विधिक बंटवारा नहीं
 हुआ है किंतु अप्रार्थी सं. 01 ता 03 द्वारा
 ख. सं. 503, 511 पर निम्नलिखित कार्य किया
 जा रहा है। अप्रार्थीगण मौके की जमीन का
 बेधान करना चाहते हैं। अतः प्रा. प्र.
 स्वीकार कर अप्रार्थीगण को पाकड़े किया
 जावे।"

मुलाबिक बहस अग्रि. अप्रार्थी सं.
 01 ता 03 - " विवादित भूमि का वर्ष 1974
 में आपसी सहमति से बंटवारा हो चुका
 है जिसकी पालना में ना. सं. 182
 स्वीकृत किया गया। अप्रार्थी सं. 01 ने अपने
 पिता के जीवनकाल में ही न्यायालय
 सहायक क्लर्क, जौधपुर के समक्ष
 वाद 31/1984 दायर किया गया। उक्त
 वाद दिनांक 29/03/84 को ठिकी किया
 गया एवं ना. सं. 334, 344 स्वीकृत किया
 गया। और राम जी के पुत्रगणों ने
 आपसी सहमति से बंटवारा कर लिया,
 जिसकी पालना में ना. सं. 349 स्वीकृत
 किया गया। स्व. औराराम जी ने उपरोक्त
 सनस्त तथ्य छुपाते हुए ना. सं. 182
 के विरुद्ध न्यायालय अति. नि. क. (I)
 के समक्ष appeal पैदा की, जिसने
 दुर्गराम की विधिक तामिल हुए बिना
 ही appeal स्वीकार कर ली गई।
 जिसके विरुद्ध अप्रार्थी सं. 01 ता 03

Order Sheet (Subsequent)

CNR NUMBER

Number of Case

Year

Versus

Date	Order with initials of Presiding Officer	Brief
------	--	-------

द्वारा न्यायालय अति सं. आ. में appeal की गई है। प्रार्थीगण द्वारा विवादित भूमि receive करने का अनुरोध चाहा गया है, जो न्यायसंगत नहीं है। अतः प्रा. पत्र खारिज किया जावे।"

अप्रार्थी सं. 01 ता 03 की ओर से जवाब प्रा. पत्र के साथ counter प्रा. पत्र पेश कर विवादित भूमि के मौका एवं record की यथास्थिति का अनुरोध चाहा गया है।

उपरोक्त ब्रह्म, दस्तावेजों, शपथ-पत्र के अनुसार प्रा. पत्र under section 212 का निस्तारण निम्नानुसार किया जाता है- "प्रार्थीगण द्वारा चाहा गया अनुरोध (विवादित भूमि को रिसीवर करने हेतु) दिया जाना उचित प्रतीत नहीं होता है। अप्रार्थी सं. 01 ता 03 की ओर से प्रस्तुत counter प्रा. पत्र अनुसार प्रथम दृष्टया मामला, सुविद्या का संतुलन, अपूरणीय सति अप्रार्थी सं. 01 ता 03 के पक्ष में साबित होते हैं। अतः तर्फसला मूलवाद विवादित भूमि के रिकॉर्ड की यथास्थिति बनी रहे। साथ ही विवादित भूमि पर कोई नवीन कच्चा/पक्का निर्माण कार्य ना हो provided that आदेशिका दिनांक 28/06/23 के अनुसार न्यायालय द्वारा ख. सं. 511 में अप्रार्थी सं. 01 द्वारा किये जाने वाले निर्माण कार्य (अपने काबिज हिस्से तक) की स्वीकृति यथावत रहेगी।" आदेश पढ़कर खुले में सुनाया गया। पत्रावली फैसल शुमार होकर दाखिल -दफतर हो।



Printed
 28/06/23